



केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड

(शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन एक स्वायत्त संगठन)

CENTRAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION

(An Autonomous Organisation Under the Ministry of Education, Govt. of India)



CBSE/ACAD/DS(MS)/2025

Date: 28.04.2025

Circular No: Acad-21/2025

All the Heads of Schools affiliated to CBSE

Subject: A Tribute to Dr. Krishnaswamy Kasturirangan – reg.

Dear Principal

Dr. Krishnaswamy Kasturirangan, an eminent scientist, educator, and architect of modern India's education reforms left an indelible mark on the two critical pillars of India's growth: Space Exploration and Education. Born on October 24, 1940, in Ernakulam, Kerala, Dr. Kasturirangan's life was a testament to intellectual rigor, visionary leadership, and an unwavering commitment to nation-building. As the architect of the National Education Policy (NEP) 2020, his contributions to education, driven by a vision for holistic, inclusive, and forward-looking learning, have reshaped India's educational landscape. Beyond his stellar achievements in space science, Dr. Kasturirangan's role in education policy formulation and institutional leadership reflects his commitment to fostering knowledge and innovation for national development.

In view of above, it is desired that our students, teachers and stakeholders should know about him, and his contribution to the nation building as a role model. A two-page write-up about Dr. Krishnaswamy Kasturirangan (*in English and Hindi*) alongwith a portrait is enclosed. The same should be read out to all in the morning assembly of school on any day of the week starting 28.04.2025. Subsequently, the students, teachers and all stakeholders could offer tributes to his portrait. The write up may be translated in regional/ local Indian language for wider accessibility.

With regards!

Dr. Praggya M Singh
Director (Academics)

Copy to the respective Heads of Directorates, Organizations and Institutions with a request to disseminate the information to all the schools under their jurisdiction:

1. The Commissioner, Kendriya Vidyalaya Sangathan, 18 Institutional Area, Shaheed Jeet Singh Marg, New Delhi-16
2. The Commissioner, Navodaya Vidyalaya Samiti, B-15, Sector-62, Institutional Area, Noida-201309
3. The Secretary, Eklavya Model Residential Schools (EMRS), Ministry of Tribal Affairs, Government of India.
4. The Secretary, Sainik Schools Society, Room No. 101, D-1 Wing, Sena Bhawan, New Delhi-110001
5. The Chairman, Odisha Adarsha Vidyalaya Sangathan, N-1/9, Near Doordarshan Kendra, PO Sainik School Nayapalli, Bhubaneswar, Odhisha-751005
6. The Director of Education, Directorate of Education, Govt. of NCT of Delhi, Old Secretariat, Delhi-110 054
7. The Director of Public Instructions (Schools), Union Territory Secretariat, Sector 9, Chandigarh-160017



‘शिक्षा सदन’ ,17 राऊज़ एवेन्यू ,इंस्टीट्यूशनल एरिया, नई दिल्ली –110002

‘Shiksha Sadan’, 17, Rouse Avenue, Institutional Area, New Delhi – 110002





केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड

(शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन एक स्वायत्त संगठन)

CENTRAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION

(An Autonomous Organisation Under the Ministry of Education, Govt. of India)



8. The Director of Education, Govt. of Sikkim, Gangtok, Sikkim –737101
9. The Director of School Education, Govt. of Arunachal Pradesh, Itanagar –791 111
10. The Director of Education, Govt. of A&N Islands, Port Blair – 744101
11. The Director of School Education, Ladakh, Room No.101-102, Ground Floor, Council Secretariat, Kurbathang, Kargil - Ladakh
12. The Director of School Education, Andhra Pradesh, 3rd Floor, B block, Anjaneya Towers, VTPS Rd, Bhimaraju Gutta, Ibrahimpatnam, Andhra Pradesh – 521 456
13. The Director, Jharkhand Education Project Council, Ranchi, Jharkhand
14. The Director, Sambhota Tibetan Schools Society (STSS), Central Tibetan Administration (CTA), Dharamshala, HP
15. The Additional Director General of Army Education, A –Wing, Sena Bhawan, DHQ, PO, New Delhi-110001
16. The Secretary AWES, Integrated Headquarters of MoD (Army), FDRC Building No. 202, Shankar Vihar (Near APS), Delhi Cantt-110010
17. The Director, Navy Education Society, Directorate of Naval Education, Naval Headquarters, Ministry of Defence, West Block-V, RK Puram, Delhi – 110066
18. DS to Chairperson, CBSE
19. Secretary/ Controller of Examinations/ All Directors, CBSE
20. All Regional Directors/ Regional Officers of CBSE with the request to send this circular to all the Heads of the affiliated schools of the Board in their respective regions
21. All Joint Secretary/ Deputy Secretary/ Under Secretary/ Assistant Secretary, CBSE
22. All Head(s)/ In-Charge(s), Centre of Excellence, CBSE
23. In charge IT Unit with the request to put this Circular on the CBSE Academic Website
24. In-Charge, Library
25. Record File

Director (Academics)



‘शिक्षा सदन’ ,17 राऊज़ एवेन्यू ,इंस्टीटूशनल एरिया, नई दिल्ली –110002
‘Shiksha Sadan’, 17, Rouse Avenue, Institutional Area, New Delhi – 110002



डॉ. कृष्णास्वामी कस्तूरीरंगन : विज्ञान और शिक्षा के क्षेत्र में एक दूरदर्शी व्यक्तित्व

डॉ. कृष्णास्वामी कस्तूरीरंगन ., एक महान वैज्ञानिक, शिक्षाविद् और आधुनिक भारत की शिक्षा क्रांति के शिल्पकार , ने भारत के दो महत्वपूर्ण क्षेत्रों, अंतरिक्ष अन्वेषण और शिक्षा सुधार, में अपनी अमिट छाप छोड़ी। 24 अक्टूबर 1940 को केरल के एर्नाकुलम में जन्मे डॉ. कस्तूरीरंगन का जीवन अनुशासन, दूरदर्शिता और राष्ट्र निर्माण के प्रति अटूट प्रतिबद्धता का प्रतीक रहा। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 के प्रमुख शिल्पकार के रूप में, उन्होंने शिक्षा को एक नए रूप में गढ़ने का कार्य किया, जिसमें समावेशिता, नवाचार और वैश्विक दृष्टिकोण को आत्मसात किया गया। अंतरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में शानदार उपलब्धियों के साथसाथ शिक्षा और ज्ञान के प्रसार में भी उनका योगदान अविस्मरणीय है।-

प्रारंभिक जीवन और वैज्ञानिक उत्कृष्टता

डॉ. कस्तूरीरंगन ने बॉम्बे विश्वविद्यालय से भौतिकी में ऑनर्स के साथ विज्ञान स्नातक और मास्टर ऑफ साइंस की डिग्री प्राप्त की और डॉ. विक्रम साराभाई के मार्गदर्शन में अहमदाबाद के भौतिक अनुसंधान प्रयोगशाला में काम करते हुए 1971 में प्रायोगिक उच्च ऊर्जा खगोल विज्ञान में डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त की। 1994 से 2003 तक इसरो के अध्यक्ष के रूप में उन्होंने कई ऐतिहासिक सफलताएं दिलाईं पोलर सैटेलाइट लॉन्च व्हीकल (PSLV) का सफल संचालन और भारत के पहले चंद्र मिशन की संकल्पना उन्हीं की दूरदृष्टि का परिणाम है। उनके नेतृत्व में इसरो ने स्वदेशी तकनीक के क्षेत्र में आत्मनिर्भरता की ओर एक लंबी छलांग लगाई।

डॉ. कस्तूरीरंगन इंटरनेशनल एकेडमी ऑफ एस्ट्रोनॉटिक्स के एकमात्र भारतीय मानद सदस्य और पूर्व उपाध्यक्ष थे। उन्हें विश्व विज्ञान अकादमी (TWAS), कार्डिफ विश्वविद्यालय और पॉटिफ्रिकल एकेडमी ऑफ साइंसेज सहित वैश्विक संस्थानों से फेलोशिप और मानद उपाधियाँ प्राप्त हुईं। उन्हें ब्रॉक मेडल, एलन डी एमिल मेमोरियल अवार्ड और थियोडोर वॉन कर्मन अवार्ड जैसे प्रतिष्ठित पुरस्कार मिले।

विज्ञान में उनके अतुलनीय योगदान के लिए उन्हें भारत सरकार ने पद्मश्री, पद्मभूषण और पद्मविभूषण जैसे सर्वोच्च नागरिक सम्मानों से सम्मानित किया।

शिक्षा के क्षेत्र में नई राह

डॉ. कस्तूरीरंगन .का मानना था कि शिक्षा ही सच्चे सामाजिक परिवर्तन की आधारशिला है। उन्होंने 2003 से 2009 तक राज्यसभा सदस्य रहते हुए शिक्षा नीतियों पर सक्रिय रूप से काम किया। उनका दृष्टिकोण शिक्षा को केवल जानकारी का साधन नहीं, बल्कि जीवन के समग्र विकास का माध्यम मानता था जिसमें वैज्ञानिक सोच के साथ मानवीय मूल्यों का भी उतना ही महत्व था।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के निर्माण में नेतृत्व

शिक्षा क्षेत्र में डॉ. कस्तूरीरंगन का सबसे महत्वपूर्ण योगदान राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के मसौदे के लिए गठित समिति के अध्यक्ष के रूप में रहा, जिसने 1986 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति का स्थान लिया। 2017 में नियुक्त, उन्होंने एक नौसदस्यीय पैनल का नेतृत्व किया-, जिसने जमीनी स्तर से राष्ट्रीय स्तर तक व्यापक परामर्श किए, जिसमें शिक्षक, वैज्ञानिक, उद्योग निकाय और समुदाय प्रतिनिधि शामिल थे। जुलाई 2020 में अंतिम रूप दी गई इस नीति ने भारत को ज्ञान महाशक्ति बनाने के लिए कई क्रांतिकारी सुधार पेश किए। डॉ. को —स्कूल से उच्च शिक्षा—कस्तूरीरंगन ने शिक्षा के विभिन्न स्तरों . जोड़ने पर बल दिया, जिसे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 21वीं सदी के भारत के लिए आधार बताया।

शैक्षणिक नेतृत्व और विरासत

नीति निर्माण से आगे बढ़कर, डॉकस्तूरीरंगन ने शैक्षणिक संस्थानों को आकार देने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय(JNU) के कुलाधिपति के रूप में, उन्होंने शैक्षणिक उत्कृष्टता और सुशासन को बढ़ावा दिया। उन्होंने कर्नाटक नॉलेज कमीशन का नेतृत्व किया, जहाँ उन्होंने शिक्षकों की भूमिका को इंजीनियरों के समकक्ष बताया। नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस्ड स्टडीज (NIAS), बेंगलुरु (2004–2009) के निदेशक और राजस्थान केंद्रीय विश्वविद्यालय तथा एनआईआईटी विश्वविद्यालय के कुलाधिपति के रूप में, उन्होंने अंतःविषय अनुसंधान और शैक्षिक नवाचार को बढ़ावा दिया। प्रधानमंत्री द्वारा उल्लेखित उनके मार्गदर्शन ने युवाओं को ज्ञान आधारित करियर अपनाने के लिए प्रेरित किया।

केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेन्द्र प्रधान ने उन्हें और "बौद्धिक महापुरुष"मार्गदर्शक करार दिया। वैज्ञानिक अनुशासन और रणनीतिक दृष्टिकोण को इसरो से शिक्षा नीति तक स्थानांतरित करने की उनकी क्षमता ने यह सुनिश्चित किया कि एनईपी 2020 भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों में निहित होते हुए वैश्विक आकांक्षाओं को भी पूरा करे।

वर्तमान में लागू हो रही राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 उनकी दूरदर्शिता को जीवित स्मारक के रूप में स्थापित करती है। विज्ञान प्रगति और शैक्षिक समानता के सेतु के रूप में, उन्होंने एक ज्ञानआधारित - भारत की नींव रखी। उनके सहयोगी उनकी विनम्रता, बौद्धिक उदारता और पीढ़ियों को प्रेरित करने की क्षमता को याद करते हैं।

उनकी स्मृति का सम्मान करते हुए, हम उन आदर्शों के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दोहराते हैं जिनका उन्होंने समर्थन किया शिक्षा को सशक्तिकरण का साधन बनाना—, नवाचार को सामाजिक शक्ति बनाना और जीवनभर सीखने को परिवर्तन की यात्रा के रूप में देखना। डॉकस्तूरीरंगन का जीवन हमें याद दिलाता है कि सच्ची महानता दूसरों को ज्ञान के माध्यम से ऊपर उठाने में निहित है, और उनके योगदान आने वाले समय में भी हमारे पथ को प्रकाशमान करते रहेंगे।

स्रोत: इसरो, द हिंदू, हिंदुस्तान टाइम्स, बिजनेस इनसाइडर इंडिया, इंडियन एक्सप्रेस, द टाइम्स ऑफ इंडिया, पीआईबी इंडिया, एनआईएस

Dr. Krishnaswamy Kasturirangan: A Visionary in Science and Education

Dr. Krishnaswamy Kasturirangan, an eminent scientist, educator, and architect of modern India's education reforms left an indelible mark on the two critical pillars of India's growth: space exploration and education. Born on October 24, 1940, in Ernakulam, Kerala, Dr. Kasturirangan's life was a testament to intellectual rigor, visionary leadership, and an unwavering commitment to nation-building. As the architect of the National Education Policy (NEP) 2020, his contributions to education, driven by a vision for holistic, inclusive, and forward-looking learning, have reshaped India's educational landscape. Beyond his stellar achievements in space science, Kasturirangan's role in education policy formulation and institutional leadership reflects his commitment to fostering knowledge and innovation for national development.

Early Life and Scientific Eminence

A prodigious scholar, Dr. Kasturirangan took his Bachelor of Science with Honours and Master of Science degrees in Physics from Bombay University and received his Doctorate Degree in Experimental High Energy Astronomy in 1971 working at the Physical Research Laboratory, Ahmedabad, under the mentorship of Dr. Vikram Sarabhai. As ISRO Chairman (1994–2003), he spearheaded landmark achievements, including the operationalization of the Polar Satellite Launch Vehicle (PSLV) and India's first lunar mission concept. It was during Kasturirangan's time that ISRO embarked on self-reliance and indigenization, which eventually paid off handsomely in creating in-house capabilities.

Dr. Kasturirangan was the only Indian honorary member and former Vice President of the International Academy of Astronautics. He held fellowships and honorary titles from global institutions, including the World Academy of Sciences (TWAS), Cardiff University, and the Pontifical Academy of Sciences. He received prestigious awards like the Brock Medal, Allan D Emil Memorial Award, and Theodore von Karman Award.

His scientific acumen earned him India's highest civilian honours—Padma Shri, Padma Bhushan, and Padma Vibhushan.

Transition to Educational Leadership

Beyond space science, Dr. Kasturirangan recognized education as the cornerstone of societal progress. He served as a Rajya Sabha member (2003–09), advocating for policy-driven educational reforms. His holistic vision blended scientific inquiry with humanistic learning, emphasizing equity, innovation, and interdisciplinary thinking.

Leadership in Formulating the National Education Policy 2020

Dr. Kasturirangan's most significant contribution to education was his role as the Chairman of the committee tasked with drafting the NEP 2020, a transformative policy that replaced the 1986 National Policy on Education. Appointed in 2017, he led a nine-member panel through extensive consultations across grassroots to national levels, engaging teachers, scientists, industry bodies, and community representatives. The resulting policy, launched in July 2020, introduced groundbreaking reforms aimed at making India a knowledge superpower. His emphasis on interconnectedness—linking school to higher education for cohesive learning—has been widely praised, with Prime Minister Narendra Modi lauding the policy as a foundation for 21st-century India.

Academic Stewardship and Legacy

Beyond policy, Kasturirangan's contributions extended to shaping educational institutions. As Chancellor of Jawaharlal Nehru University (JNU), he influenced academic excellence and governance. He also chaired the Karnataka Knowledge Commission, advocating for teacher professionalization and comparing their role to that of engineers. His tenure as Director of the National Institute of Advanced Studies (NIAS), Bengaluru (2004–2009), and Chancellor of the Central University of Rajasthan and NIIT University furthered interdisciplinary research and innovation in education. Kasturirangan's mentorship of young scientists and educators, noted by the Prime Minister, inspired a generation to pursue knowledge-driven careers.

Union Education Minister Sh. Dharmendra Pradhan called him an “intellectual titan” and a guiding light. His ability to translate his scientific rigor and strategic vision from ISRO to education policy ensured that the NEP 2020 was rooted in India's cultural values while addressing global aspirations.

The NEP 2020, now in implementation, stands as a living tribute to his foresight. By bridging scientific advancement with educational equity, he laid the groundwork for a knowledge-driven India. Colleagues recall his humility, intellectual generosity, and ability to inspire generations.

In honouring his memory, we reaffirm our commitment to the ideals he championed—education as empowerment, innovation as a societal force, and lifelong learning as a journey of transformation. Dr. Kasturirangan's life reminds us that true greatness lies in lifting others through knowledge, and his contributions will continue to illuminate the path toward an enlightened future.

Sources: ISRO website, The Hindu, Hindustan Times, Business Insider India, Indian Express, The Times of India, PIB India, NIAS



Dr. K. Kasturirangan

24 October 1940 – 25 April 2025

